



**NEERAJ®**

# **M.H.D.-12**

# **भारतीय कहानी**

**Chapter Wise Reference Book**  
**Including Many Solved Sample Papers**

*Based on*

# **I.G.N.O.U.**

**& Various Central, State & Other Open Universities**

*By: Sanjay Jain, M.A. (Hindi), B.Ed.*



**NEERAJ**  
**PUBLICATIONS**

*(Publishers of Educational Books)*

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: [info@neerajbooks.com](mailto:info@neerajbooks.com)

Website: [www.neerajbooks.com](http://www.neerajbooks.com)

**MRP ₹ 300/-**

## Content

# भारतीय कहानी

Question Paper—June-2024 (Solved) .....	1-3
Question Paper—December-2023 (Solved) .....	1-2
Question Paper—June-2023 (Solved) .....	1-3
Question Paper—December-2022 (Solved) .....	1-3
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) .....	1-3
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) .....	1-2
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) .....	1-3
Question Paper—December, 2019 (Solved) .....	1-3
Question Paper—June, 2019 (Solved) .....	1-3
Question Paper—December, 2018 (Solved) .....	1-3
Question Paper—June, 2018 (Solved) .....	1-4

---

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
--------------	-----------------------------------	-------------

---

### मलयालम, कन्नड़, तमिल और तेलुगु भाषा की कहानियां

1. दीदी : विश्लेषण और मूल्यांकन .....	1
2. लड़की जिसकी मैंने हत्या की : विश्लेषण और मूल्यांकन .....	20
3. ट्रेडिल : विश्लेषण और मूल्यांकन .....	27
4. प्राणधारा : विश्लेषण और मूल्यांकन .....	38

### बांग्ला, असमी और ओड़िया भाषा की कहानियां

5. अपने लिए शोकगीत : विश्लेषण और मूल्यांकन .....	49
6. एक अविस्मरणीय यात्रा : विश्लेषण और मूल्यांकन .....	62
7. बघेई : विश्लेषण और मूल्यांकन .....	70

**मराठी, कोंकण, गुजराती और राजस्थानी भाषा की कहानियाँ**

8. विद्रोह : विश्लेषण और मूल्यांकन .....	79
9. ओऽरे चुरुंगन मेरे : विश्लेषण और मूल्यांकन .....	87
10. चिता : विश्लेषण और मूल्यांकन .....	96
11. दूजौ कबीर : विश्लेषण और मूल्यांकन .....	103

**उर्दू, पंजाबी, कश्मीरी और मैथिली भाषा की कहानियाँ**

12. टोबा टेक सिंह : विश्लेषण और मूल्यांकन .....	109
13. अपना-अपना कर्ज : विश्लेषण और मूल्यांकन .....	115
14. जवाबी कार्ड : विश्लेषण और मूल्यांकन .....	122
15. पाँच पत्र : विश्लेषण और मूल्यांकन .....	131



**Sample Preview  
of the  
Solved  
Sample Question  
Papers**

*Published by:*



**NEERAJ  
PUBLICATIONS**

[www.neerajbooks.com](http://www.neerajbooks.com)

# QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

भारतीय कहानी

M.H.D.-12

समय : 2 घण्टे ]

] अधिकतम अंक : 50

नोट : निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है।

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

(क) हाय भगवान! माता-पिता ही अपनी बेटी को पाप के गर्त में धकेलते हैं। उनका क्या होगा? इसका क्या होगा? उन्होंने यह समझा होगा कि उनके मन्त मानने से बेटी मरने से बच गई। परन्तु प्रत्येक दिन वह जो काम करती है, उससे उसके जीवन का स्त्रीत्व ही दिन-दिन मर रहा है। यह उन्हें कैसे समझाए, जब यह बच्ची थी तब एक क्षण में मर जाने के बदले अब हर दिन, हर क्षण, तिल-तिल करके मर रही है, क्या वह यह बात समझते हैं? नहीं, यही तो आश्चर्य की बात है, उसका पूर्ण विश्वास है कि वह जो कर रही है, ठीक है। वह कार्य भगवान को प्रिय है। उसके बचाए जीवन को इस प्रकार उपयोग में लाए तो उसकी प्रिय सेवा होगी? विवाहित स्त्री जिस कार्य को बुरा मानती है, वह अपने उसी कार्य को जीवन का धर्म मानकर चल रही है।

उत्तर-संदर्भ-प्रस्तुत गद्यांश कन्नड कथाकार आनंद की कहानी 'लड़की जिसकी मैंने हत्या की' से लिया गया है। प्रस्तुत कहानी में धर्म के नाम पर महिलाओं के शोषण को उजागर किया गया है। धर्म के नाम पर एक बच्ची को वेश्या बनाकर छोड़ दिया जाता है। लेखक को जब चैनम्मा के बसवी होने का पता चलता है, तो वह उसे इस अत्याचार से बाहर निकालना चाहता है। लेखक चैनम्मा के माता-पिता और उन जैसे लोगों के बारे में विचार करता है, जो धर्म के नाम पर लड़कियों को शोषण और अत्याचार के लिए समाज के सामने फेंक देते हैं।

व्याख्या-लेखक दुखी होकर कहता है कि अपनी बेटी को पाप के गड्ढे में डालने वाले माता-पिता का क्या होगा और उन बच्चियों का क्या होगा, जो बेकसूर होकर भी शोषण सह रही हैं। माता-पिता अंधविश्वास और धर्म की बेड़ियों में फँसकर अपने ही बच्चों के साथ अत्याचार कर बैठते हैं। चैनम्मा के माता-पिता को लगता है कि उनके मन्त मानने से उनकी बेटी बच गई, परन्तु उसे बसवी बनाकर प्रतिदिन उसका स्त्रीत्व मर रहा है, यह उसके माता-पिता नहीं समझ पा रहे हैं। बीमारी से वह एक क्षण में मर

जाती, किंतु अब वह पल-पल मर रही है। उसके मन में भी यह बिठा दिया गया है कि वह जो कर रही है, वह ठीक है, कोई पाप नहीं है, यह धर्म का कार्य है, ईश्वर की सेवा है। एक विवाहित स्त्री के लिए जो कार्य अधर्म और पाप है, उसे धर्म के नाम पर एक बच्ची से सही मानकर करवाया जा रहा है, जो संभवतः सबसे बड़ा पाप है।

विशेष-1. अंधविश्वास की आड़ में शोषण पर चोट की गई है।

2. भाषा सहज एवं बोधगम्य है।

3. दार्शनिकता की झलक है।

(ख) पानी! पानी शब्द सुनते ही अविनाश की समस्त तंत्रिकाएँ जैसे जागृत हो गईं। उन्होंने महसूस किया कि इस वक्त उन्हें पानी की सख्त जरूरत है। लेकिन फिर भी उन्होंने आँख नहीं खोली। और आँख बंद किए-किए बोलना उचित नहीं था। मगर जवाब न पाकर शायद वे पानी न लाएँ, कहें कि रहने दो, रहने दो, डिस्टर्ब करने की जरूरत नहीं है। जागने से ही पानी पीने को मिल सकता है। अविनाश ने आँखें खोल दीं।

बड़े बेटे ने पूछा, बाबा पानी पीओगे? बड़े बेटे का ऐसा स्वर कितने दिनों से नहीं सुना अविनाश ने?

उत्तर-संदर्भ-प्रस्तुत गद्यांश बांग्ला की प्रमुख कहानीकार आशापूर्णा देवी की कहानी 'अपने लिए शोकगीत' से लिया गया है।

'अपने लिए शोकगीत' अवकाश प्राप्त यानी रिटायर्ड आदमी अविनाश की कहानी है। अविनाश के परिवार में बच्चे-बहू, पोते-पोती सब हैं। मगर अविनाश को लगता है कि वह अपने घर में अप्रासंगिक हो गए हैं, अकेले हो गए हैं। कोई उनका ख्याल नहीं रखता।

इस कहानी में मनुष्य के मन की भीतरी परतों को कुरेदने-पहचानने की कोशिश की गई है। अवकाश ग्रहण करने के बाद व्यक्ति में एक तरह का खालीपन आ जाता है, वह खुद को अकेला और कमजोर समझने लगता है। उन्हें लगता है कि बच्चे उनकी बातें नहीं मानते। उनसे कोई सलाह नहीं लेता, उनकी बातों को अहमियत नहीं देता। यह एक मनोवैज्ञानिक बदलाव होता है।

रिटायरमेंट के बाद भी व्यक्ति की आदतों में बदलाव आता है। इस कहानी में अविनाश में ये मनोवैज्ञानिक लक्षण सहज ही देखे जा सकते हैं।

**व्याख्या**—अविनाश की पत्नी उनके लिए पानी लाती है। अविनाश लेते हुए हैं। पानी! शब्द सुनकर अविनाश का मन-मस्तिष्क सक्रिय हो जाता है। वे अपनी और घर के लोगों की स्थिति पर विचार-विमर्श करने लगते हैं। उन्हें लगता है कि इस समय उन्हें पानी पीने की आवश्यकता है, लेकिन फिर भी वे आँखें बंद कर पड़े रहें, क्योंकि उन्हें लगा कि आँखें बंद कर लेते हुए बोलना बेकार है और इससे बाकी लोग सोचेंगे कि मैं सोने का नाटक कर रहा हूँ। फिर तुरंत उन्हें विचार आता है कि जवाब न देने पर पानी न मिले। फिर सोचते हैं कि रहने दो, किसी को क्या तंग करना? इसके तुरंत बाद उनका विचार बदलता है कि जागने पर ही पानी मिल सकता है, तो वे आँख खोल देते हैं।

**विशेष**—इन पंक्तियों में घर के लोगों की ओर अपना ध्यान खींचने और अपनी अहमियत समझाने के लिए एक रिटायर्ड बुजुर्ग व्यक्ति की मनःस्थिति को दिखाया गया है।

(ग) लेडेंग के लोगों को गुस्सा आया, वे आहत हुए, शोक किया उन्होंने, निराश हुए, लेकिन सहने के अलावा उन्हें कोई दूसरा उपाय सूझता नहीं था। लेकिन आम गैर-आदिवासियों को इस परिस्थिति से जितना दुख हुआ होता, उन्हें उससे कहीं ज्यादा हो रहा था। आमगैर-आदिवासियों ने यह अनुभव तो किया ही, इसके साथ ही उन्हें गहरे अपमान का बोध हुआ। बाघ हो या कुत्ता, जानवर उनकी दृष्टि में सिर्फ जानवर नहीं हैं। वे उसे आदमी की तरह ही समझते हैं, उसके काम को न्याय-अन्याय के काँटे पर तौलते हैं। इसलिए जो कुछ भी होता, वह उनकी दृष्टि में बुद्धिहीन, विवेकरहित, चेतनाहीन, जंतु की पाशविकता नहीं थी।

**उत्तर-संदर्भ**—प्रस्तुत पंक्तियां गोपीनाथ मोहंती की कहानी 'बर्धई' से उद्धृत है। इस कहानी में उड़ीसा के आदिवासी जीवन की झलक है, जिसमें यह बताया गया है कि आदिवासी लोगों का जीवन उनकी जन्मभूमि, जंगल और उसमें उपलब्ध संसाधनों तक सीमित होता है। उनके विश्वास और मान्यताएं भी अपने समाज के लोगों और परंपराओं से जुड़ी होती हैं। इसी संदर्भ में लेखक ने लेडेंग घाटी के लोगों के मन में बाघ का आतंक न होने और उसके पीछे की धार्मिक मान्यता को भी स्पष्ट किया है। इसी संदर्भ में लेखक कहता है कि—

**व्याख्या**—लेडेंग के लोग इस बात पर क्रोधित थे कि उनके जंगल के प्राणियों को हिंसक और दोषी माना जा रहा है। यह सुनकर उन्हें अत्यंत दुख हुआ, किंतु इस दुख को सहने के अलावा उनके पास अन्य कोई विकल्प नहीं था। जो लोग आदिवासी नहीं हैं, उन्हें इस परिस्थिति से शायद दुख हो, किन्तु आदिवासी तो जंगल के सभी संसाधनों एवं प्राणियों का हिस्सा हैं। आम

गैर-आदिवासियों को दुख और अपमान का बोध हुआ। आदिवासियों के लिए जंगल के पशु मात्र पशु न होकर उनकी तरह इंसान की तरह हैं। वे जानवरों के कार्य को भी न्याय-अन्याय की दृष्टि से देखते हैं, इसलिए आदिवासियों की नजर में बाघ द्वारा किया गया कृत्य किसी बुद्धिहीन विवेकरहित, चेतनाहीन, पशु की पशुता नहीं थी।

**विशेष**—1. आदिवासियों की जीवन-शैली का वर्णन है।

2. आदिवासी पशु-पक्षी, जंगल सभी के प्रति आत्मीयता रखते हैं।

3. भाषा बोधगम्य एवं संवेदनात्मक है।

(घ) अबूझ बालक के सिवाय किसका ऐसा निर्मल हृदय हो सकता है? बढ़ती उम्र और समझ के साथ सौ में से एक सौ पाँच इंसानों को कीचड़ में सनना पड़ता है। तब यह अकेली बानगी कैसी बची रह गई? राजकुमारी के रोम-रोम में धंसा डर किसी अदीठ जादू के जोर से अदेर, अनन्त फख्र और हर्ष में बदल गया। इंसानों के जमघट में फकत इंसान नाम की कमी है। इस पुतले से मिलकर तो खुद मौत भी अपना भाग्य सराहेगी। ऐसी मौत पर तो लाखों जीवन न्यौछावर! मारने से ज्यादा तो राजा का भी वश नहीं है। फिर मरने का डर न होने पर कैसा जोखिम? कैसी हिचकिचाहट? मरना निश्चित है, तब भी तमाम लोग मरने से डरते हैं।

**उत्तर-संदर्भ**—प्रस्तुत गद्यांश राजस्थानी लेखक विजयदान देशा की कहानी 'दूजौ कबीर' से उद्धृत है। राजमद में चूर राजा कबीर के साथ बदसलूकी करता है। कबीर के प्रारंभिक व्यवहार से राजकुमारी को ग्लानि होती है कि उसने कबीर के बारे में जो सोचा, वह वैसा नहीं है। कबीर अपनी दार्शनिकता से अपने निर्मल हृदय और संसार से अलग होने का एहसास करवाता है, जिसे राजकुमारी को अपनी सोच और निर्णय पर गर्व होता है।

**व्याख्या**—कबीर ने जिस सहजता एवं शुद्ध अंतःकरण से संसार की निस्सारता को समझाया, वैसा तो हृदय तो केवल छल-कपट से दूर बालक का हो सकता है। जैसे-जैसे मनुष्य की आयु बढ़ती है, वह संसार की माया के कीचड़ में फँसता जाता है। फिर कबीर कैसे संसार के कीचड़ में सनने से रह गया। राजकुमारी के मन में भय था कि कहीं कबीर भी औरों जैसा न निकले, किंतु कबीर के विचार जानने के बाद उसका भय हर्ष और गर्व में बदल गया। मनुष्यों की भीड़ में सच्चे मनुष्य मिलना मुश्किल है। कबीर जैसे मनुष्य से मिलकर तो मौत भी अपने भाग्य पर गर्व करेगी। ऐसी मृत्यु पर तो असंख्या जीवन न्यौछावर किए जा सकते हैं। राजा अधिक-से-अधिक कबीर को मृत्युदंड दे सकता है, किंतु मरने का डर न होने पर तो कोई कठिनाई नहीं है। जब मृत्यु अटल तो मृत्यु से डरना क्यों?

**विशेष**—1. संसार की असारता का वर्णन है।

# Sample Preview of The Chapter

*Published by:*



**NEERAJ  
PUBLICATIONS**

[www.neerajbooks.com](http://www.neerajbooks.com)

# भारतीय कहानी

मलयालम, कन्नड़, तमिल और तेलुगु भाषा की कहानियां

## दीदी : विश्लेषण और मूल्यांकन

1

### परिचय

मलयालम भाषा प्रमुखतः भारत के केरल राज्य में बोली जाती है, परंतु अन्य राज्यों में मलयालम भाषी कम ही हैं। पूरे भारत में लगभग साढ़े तीन करोड़ लोग मलयालम भाषा बोलते हैं। मलयालम भाषा केरल के उच्च शिक्षा स्तर के कारण अधिक पुरानी न होने पर भी साहित्य की संरचना में सशक्त है। कहानी मलयालम भाषा की प्रमुख विधा है। एम.टी. वासुदेवन नायर जो 'एम.टी' नाम से प्रसिद्ध है और मलयालम कहानी के विकास के तीसरे दौर के प्रतिनिधि रचनाकार हैं। उनकी पूर्व पीढ़ी मार्क्सवादी दर्शन से प्रभावित तकषी शिवशंकर पिल्लै की थी। पिल्लै की रचनाएं यथार्थवाद के ठोस धरातल पर गठित थीं। वे गरीब, शोषित एवं मेहनती वर्ग की भलाई हेतु समाज को बदलना चाहते थे। एम.टी. की पीढ़ी ने व्यक्ति के मन की गहराइयों में पैठकर, उनके विचारों को बिना काट-छांटकर रचनाओं में जाहिर किया। एम.टी. की पूर्व पीढ़ी के रचनाकारों—तकषी, बशीर, पोट्टक्काट आदि ने व्यक्ति से विमुख होकर सामाजिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य में समस्याओं का मूल्यांकन करने एवं उन्हें सुलझाने का प्रयास किया।

स्वतंत्रता के बाद लोगों की आशाएं पूरी नहीं हुईं। केरल में वामपंथी सरकार सत्ता में आई थी, लेकिन जल्दी ही गिर गई। वामपंथी आंदोलन और भूमि सुधार ने आम जनता की हालत में बदलाव जरूर किया था, लेकिन मध्यवर्ग निराशा एवं व्यर्थताबोध से पीड़ित था। वामपंथी विचारधारा और वामपंथी सरकार के

सुधारात्मक कदमों से सामंतशाही मातृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था के विघटन वाले परिवेश में व्यक्ति चरित्र को प्रगतिवादी रचनाकार नहीं समझ पाए। मेहनती व मजदूर वर्ग की तरह ये भी अभावों से पीड़ित थे, लेकिन मूल्यबोध के कारण वामपंथी विचारधारा को नकार दिया। एम.टी. ने अपने कथा साहित्य में इसी मध्यवर्ग की निराशा, व्यर्थता व प्रतिरोध को स्थान दिया। समाज में जिदगी, रिश्ते, मुश्किलें व तकलीफें भी यथार्थवाद में शामिल हैं। एम.टी. की सर्जनात्मकता ने पूर्व पीढ़ी से अलग रास्ता आत्मसात करते हुए सर्जनात्मक क्षेत्र पर अपनी गहरी छाप दर्ज की है।

प्रस्तुत अध्याय में एम.टी. वासुदेवन नायर का परिचय, जीवन, साहित्य, मलयालम कहानी में उनका योगदान, उनके विचार, 'दीदी' कहानी का कथानक, आयाम, भाषा-शैली आदि की चर्चा की जाएगी।

### अध्याय का विहंगावलोकन

#### लेखक का परिचय

एम.टी. वासुदेवन नायर मलयालम भाषा के विख्यात साहित्यकार हैं। ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता रहे हैं। इनके द्वारा रचित एक उपन्यास 'कालम' के लिये उन्हें सन 1970 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

एम. टी. वासुदेवन नायर (जन्म 9 अगस्त, 1933) भारतीय लेखक, पटकथा लेखक और फिल्म निर्देशक हैं। वे आधुनिक मलयालम साहित्य में एक विपुल और बहुमुखी लेखक हैं और



2 / NEERAJ : भारतीय कहानी

स्वतंत्रता के बाद के भारतीय साहित्य के रचनाकारों में से एक हैं। उनका जन्म कुडल्लूर में हुआ था, जो आज के पट्टांबी तालुक, पलक्कड़ जिले (पालघाट) के एक छोटे से गाँव में है, जो ब्रिटिश राज के मद्रास प्रेसीडेंसी में मालाबार जिले के अंतर्गत आता था। उन्होंने 20 साल की उम्र में एक रसायन विज्ञान स्नातक के रूप में ख्याति अर्जित की, उन्होंने द न्यूयॉर्क हेराल्ड ट्रिब्यून द्वारा आयोजित विश्व लघु कथा प्रतियोगिता में मलयालम में सर्वश्रेष्ठ लघु कहानी के लिए पुरस्कार जीता। उनका पहला उपन्यास 'नालुकेट्टू' (पैतृक घर-अंग्रेजी में अनूदित विरासत के रूप में अनुवादित), 23 वर्ष की आयु में लिखा गया, 1958 में केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार जीता। उनके अन्य उपन्यासों में 'मंजू' (धुंध), 'कालम' (समय), 'असुरविधु' (द प्रोडिगैल) शामिल हैं। 'बेटा - द डिमोन सीड' के रूप में अंग्रेजी में अनुवाद किया गया अपने शुरुआती दिनों के गहरे भावनात्मक अनुभव एम.टी. के उपन्यासों के निर्माण में चले गए हैं। उनकी अधिकांश रचनाएं मूल मलयालम पारिवारिक संरचना और संस्कृति की ओर उन्मुख हैं और उनमें से कई मलयालम साहित्य के इतिहास में पथ-प्रदर्शक थे। केरल में मातृसत्तात्मक परिवार में जीवन पर उनके तीन सेमिनरी उपन्यास हैं— 'नालुकेट्टू', 'असुरविधु' और 'कालम'। भीमसेना की दृष्टि से 'महाभारत' की कहानी को फिर से पढ़ने वाली 'रंदामुझम' को उनकी कृति के रूप में व्यापक रूप से श्रेय दिया जाता है।

एम.टी. वासुदेवन नायर एक पटकथा लेखक और मलयालम फिल्मों के निर्देशक हैं। उन्होंने सात फिल्मों का निर्देशन किया है और लगभग 54 फिल्मों के लिए पटकथा लिखी है। उन्होंने चार बार सर्वश्रेष्ठ पटकथा के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीता—ओरु वडक्कन वीरगाथा (1989), कदवु (1991), सदायम (1992), और परिनयम (1994), जो पटकथा श्रेणी में किसी के द्वारा लिखित सबसे अधिक है। उन्हें मलयालम साहित्य में उनके समग्र योगदान के लिए 1995 में भारत के सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार ज्ञानपीठ से सम्मानित किया गया था। 2005 में भारत का तीसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्मभूषण उन्हें प्रदान किया गया। उन्होंने साहित्य अकादमी पुरस्कार, केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार, वायलार पुरस्कार, वल्लथोल पुरस्कार, एडुथचन पुरस्कार और मातृभूमि साहित्य पुरस्कार सहित कई अन्य पुरस्कार और मान्यता प्राप्त की है। उन्हें वर्ष 2013 के लिए मलयालम सिनेमा में जीवन भर की उपलब्धि के लिए जेसी डैनियल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने कई

वर्षों तक 'मातृभूमि इलस्ट्रेटेड वीकली' के संपादक के रूप में कार्य किया।

वासुदेवन का जन्म 9 अगस्त 1933 को कुडल्लूर में वर्तमान पलक्कड़ जिले में हुआ था। वे टी. नारायणन नायर और अम्मलू अम्मा से पैदा हुए चार बच्चों में सबसे छोटे थे। उनके पिता सीलोन में थे और उन्होंने अपने शुरुआती दिन कुडल्लूर में और अपने पिता के घर पुन्युरकुलम में, जो वर्तमान त्रिशूर जिले के एक गाँव में था। उन्होंने अपनी स्कूलिंग मालमाक्वावु प्राथमिक स्कूल और कुमारानेलोर हाई स्कूल से पूरी की। उन्हें हाई स्कूल के बाद शिक्षा को छोड़ना पड़ा, और जब उन्होंने 1949 में कॉलेज में दाखिला लिया, तो उन्हें विज्ञान की धारा का चयन करने की सलाह दी गई, क्योंकि यह महसूस किया गया कि विज्ञान में एक डिग्री ने किसी भी अन्य डिग्री की तुलना में तेजी से नौकरी हासिल की। उन्होंने 1953 में विक्टोरिया कॉलेज, पलक्कड़ से केमिस्ट्री में डिग्री प्राप्त की। उन्होंने एक साल के लिए पट्टांबी बोर्ड हाई स्कूल और चावक्कड बोर्ड हाई स्कूल में गणित पढ़ाया और 1955-56 में एम.बी. ट्यूटोरियल कॉलेज, पलक्कड़ में काम किया। उन्होंने 'मथुभु' साप्ताहिक के उपमन्त्री के रूप में शामिल होने से पहले कुछ हफ्तों तक कन्नूर के तलिपारम्बा में एक खंड विकास कार्यालय में ग्रामसेवक के रूप में भी काम किया।

एम.टी. की दो बार शादी हो चुकी है। उन्होंने 1965 में लेखक और अनुवादक प्रमेला से शादी की। शादी के 11 साल बाद वे अलग हो गए। इस विवाह से उनकी एक बेटी, सीथारा है, जो संयुक्त राज्य अमेरिका में एक व्यवसायिक कार्यकारी के रूप में काम करती है। उन्होंने दूसरा विवाह नृत्य कलाकार कलामंडलम सरस्वती से किया, जिनके साथ उनकी एक बेटी, नर्तकी असावथी नायर है। एम.टी. अपनी सबसे बड़ी बेटी के नाम पर सीथारा, कोट्टारम रोड, कालीकट में रहते हैं।

एम.टी. ने बहुत कम उम्र में लिखना शुरू किया, जो उनके बड़े भाइयों से प्रेरित था, जिन्होंने कई साहित्यिक पत्रिकाओं और कवि अक्खितम अच्युतन नमोबोथिरी में बार-बार लिखा था, जो हाई स्कूल में उनके वरिष्ठ थे। उन्होंने शुरू में कविताएँ लिखीं, लेकिन जल्द ही गद्य लेखन में बदल गईं। उनका पहला प्रकाशित काम प्राचीन भारत के हीरा उद्योग पर एक निबंध था, जिसका शीर्षक 'प्रचेनाभरार्थथिले वायरा व्यावास्यम' था, जो गुरुवयूर के सीजी नायर द्वारा प्रकाशित द्विवाषिक रूप से केरलाक्षेम में दिखाई दिया था। उनकी पहली कहानी 'विशुवघोषम'

1948 में मद्रास-आधारित 'चित्रकल्लम' पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। यह कहानी एक लड़के की भावनाओं की पड़ताल करती है कि वह खुद के पटाखे रखने के लिए बहुत गरीब है, क्योंकि वह घरों के घरों से आने वाली दरार की आवाज सुनता है, विशु के नए साल के त्यौहार का जश्न मनाने वाले अमीर, नुकसान की भारी भावना, दर्दनाक एहसास है कि ये चीजें हैं और जिस तरह से वे रहने की संभावना है। उनकी पहली पुस्तक, रक्थम पुरंडा मनलथिरक्कल 1952 में प्रकाशित हुई थी।

एम.टी. का पहला साहित्यिक पुरस्कार उन्हें तब मिला, जब वह विक्टोरिया कॉलेज, पलक्कड़ में एक छात्र थे—उनकी लघु कहानी (वेलारथुमृगंगल) (पेट एनिमल्स) ने द न्यू यॉर्क हेराल्ड ट्रिब्यून, हिंदुस्तान टाइम्स और मातृभूमि में आयोजित विश्व लघु कथा प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार जीता था। 1954 सर्कस में कलाकारों की दयनीय दुर्दशा को दर्शाती एक छोटी कहानी थी। कई कहानियां जो विषयों से जुड़ी हुई थीं, वे व्यापक रूप से अलग-अलग मिलियन्स और संदर्भों से अलग थीं, लेकिन समान रूप से सफल और लोकप्रिय थीं।

उनकी कहानियों के विख्यात संग्रहों में इरुत्तीन अठमावु, ओलवम थेरवुम, बंधनम, वारिकुझी, डारे-ए-सलाम, स्वरगम थुरक्कुन्ना सम्यम, वानप्रथम और शरलॉक हैं। 'इरुत्तिन्टे एथमावु' ('सोल ऑफ डार्कनेस'), जो कि उनकी लघु कहानियों में सबसे ज्यादा चर्चित है, एक 21 वर्षीय व्यक्ति की हृदय विदारक कहानी है, जिसे हर किसी के लिए एक घृणित माना जाता है और इसका इलाज किया जाता है। कहानी सभ्य और कथित रूप से समझदार दुनिया के पीछे के पागलपन को उजागर करती है। 'शरलॉक' कहानी एम.टी. के पाठकों और अमेरिका में भारतीय प्रवासियों की परिष्कृत दुनिया से परिचित ग्रामीण मील के पत्थर के बीच चलती है, उनके बीच सूक्ष्म विडंबना के साथ इसके विपरीत को उजागर करती है। एम.टी. ने प्रतीत होता है मूर्खतापूर्ण ग्रामीण जीवन ('कुरुकांते कल्याणम' या 'द जैकाल की शादी' और 'शिलालिखीगल' या 'स्टोन शिलालेख') और निजीकरणों के दिल में छिपी क्रूरता को कृषि चक्र पर निर्भर लोगों द्वारा सहन किया, 'कार्कीटाकोम' और 'पल्लीवलम कलचिलंबम' या 'पवित्र तलवार और पायल')। 'वानप्रस्थम' कहानी में, उन्होंने एक शिक्षक और एक छात्र के बीच नाजुक संतुलित संबंध का अध्ययन किया है, जो चमत्कारिक रूप से वर्षों से जीवित है।

एम.टी. वासुदेवन नायर का मत है कि लघुकथा एक शैली है, जिसमें एक लेखक पूर्णता के करीब पहुंच सकता है। उन्होंने टी. पचनाभन के साथ, तथाकथित पुनर्जागरण के, और पचास के दशक और साठ के दशक की नई लघु कहानी, मलयालम में शुरुआती आधुनिक लघु कथाकारों के बीच सेतु का काम किया।

एम.टी. का पहला उपन्यास 'पथिरावुम पकलवेलिचवम' (मिडनाइट एंड डेलाइट) 1957 में 'मातृभूमि' साप्ताहिक में प्रसारित किया गया था। उनका पहला प्रमुख काम 'नालुकेट्टु' एक सामान्य संयुक्त परिवार में मौजूद स्थिति का सत्य चित्रण है। यह शीर्षक नायर संयुक्त परिवार के पारंपरिक पैतृक घर (तरवाड़) के नालुकेट्टू का है। उपन्यास मलयालम उपन्यास में एक क्लासिक बना हुआ है। इसने 1950 के दशक में एस्के पॉट्टेकट्ट, ठाकाजी शिवसंकरा पिल्लई, वैक्कोम मुहम्मद बशीर और उरोब द्वारा शुरू की गई एक साहित्यिक परंपरा के नवीनीकरण में योगदान दिया। इसे 1959 में केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया था। इसके 23 पुनर्मुद्रण हुए हैं और 14 भाषाओं में इसका अनुवाद किया गया था और इसकी आधे मिलियन प्रतियों की रिकॉर्ड बिक्री हुई और अभी भी सर्वश्रेष्ठ विक्रेता सूची में शामिल है। 1995 में एम.टी. ने स्वयं दूरदर्शन के लिए एक टेलीविजन फिल्म में उपन्यास को रूपांतरित किया। इसने वर्ष 1996 के लिए केरल राज्य टेलीविजन पुरस्कार जीता।

असुरविथु (द डेमन सीड; 1972), जो किजविकमुरी नाम के एक काल्पनिक वल्लुवदन गांव में स्थापित है, को लगभग नालुकेट्टू की अगली कड़ी माना जा सकता है। इसकी एक ही भू-भौतिकीय और सामाजिक-सांस्कृतिक सेटिंग है। उपन्यास में नायक गोविंदकुट्टी, नायर थारवडु के सबसे छोटे बेटे की दुर्दशा का वर्णन करता है, क्योंकि वह सामाजिक परिदृश्य, सामाजिक अन्याय और अपनी आंतरिक चेतना के बीच फंस गया है। 'असुरविथु' में स्वदेशी संस्कृति और परिवार और समुदाय के विघटन के प्रदूषण में एक विदेशी संस्कृति के हानिकारक प्रभाव के स्पष्ट संकेत हैं। ये दो शुरुआती उपन्यास-नालुकेट्टू और असुरविथु-एक चरण है, जिसमें केरल के आर्थिक और सांस्कृतिक परिदृश्य में लक्षण प्रकट हुए, जो बाद के स्तर पर खतरनाक पारिस्थितिक प्रवृत्ति में विकसित होने थे।

उनके बाद के उपन्यास, जैसे कि मंजू (धुंध; 1964) और कालम (समय; 1969), विपुल गीतकार की विशेषता है, जो नालुकेट्टु या असुरविथु में नहीं पाए जा सकते हैं। पितृसत्तात्मक

4 / NEERAJ : भारतीय कहानी

वर्चस्व और शोषण के इको-फेमिनिस्ट विषय 'मंजू' महिला नायक (विमला) के साथ एम.टी. के एकमात्र उपन्यास में अधिक प्रमुखता से है। नैनीताल के शानदार परिदृश्य में स्थित यह वल्लुवनादरा गाँव से अलग एक मील के पत्थर के रूप में अलग खड़ा है। उपन्यास का कथानक कथित तौर पर निर्मल वर्मा की हिंदी कहानी 'परिंदे' (पक्षी, 1956) से मिलता-जुलता है। हालांकि एम.टी. और वर्मा दोनों ने इन दावों को खारिज कर दिया है।

उपन्यास 'कालम' में एम.टी. अपने पसंदीदा मील के पत्थर पर लौटते हैं, जीर्ण-शीर्ण संयुक्त-परिवार नायर तारवाड़, एक स्वतंत्र भारत में केरल के ढहते मातृसत्तात्मक आदेश की पृष्ठभूमि में वल्लुवदन गांव की व्यापक पृष्ठभूमि के खिलाफ सेट है। सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिवर्तन की रूपरेखाओं के कारण, सेतु, नायक, सबसे ऊपर हैं। 'कालम' हालांकि सख्ती से आत्मकथात्मक नहीं है, किंतु इसमें एक मजबूत आत्मकथात्मक तत्व है। मंजू ने 1983 में एक फिल्म अनुकूलन किया था, जिसे स्वयं एम.टी. ने लिखा और निर्देशित किया था। उपन्यास में 'सारथ संध्या' नामक एक हिंदी भाषा की फिल्म का रूपांतरण भी था।

रंदामुझम (द सेकंड टर्न; 1984), व्यापक रूप से लेखक की कृति के रूप में माना जाता है, भीमसेना की दृष्टि से महाभारत की कहानी को फिर से चित्रित करता है, जिसे वायु का पुत्र माना जाता है; इस उपन्यास में, भीम को लेखक के विडंबनापूर्ण उपक्रमों के माध्यम से एक नई मनोवैज्ञानिक गहराई का लाभ मिलता है।

एम.टी. का नवीनतम उपन्यास वाराणसी (2002) है, जो उत्तर भारत के एक तीर्थस्थल वाराणसी की एक भावनात्मक यात्रा है। प्रोफेसर श्रीनिवासन के पत्र के साथ वाराणसी खुल जाता है, नायक अपनी पुरानी किताबों में उनकी अधूरी थीसिस का जिक्र करते हैं। प्रोफेसर उसे अपने घर वाराणसी में आमंत्रित करता है। सुधाकरन, अपने साठ के दशक में, और एक प्रोस्टेट प्रक्रिया से उबरकर, प्रोफेसर को आश्चर्यचकित करने का फैसला करता है। वह आने पर महसूस करता है कि प्रोफेसर की हाल ही में ही मृत्यु हो गई है। कहानी समय के बदलावों में, यादों की एक शृंखला के साथ विकसित होती है। कथन में तीसरा, पहला और दूसरा व्यक्ति शामिल है। वाराणसी के लिए ट्रेन में, सुधाकरन ने सुमिता नागपाल द्वारा लिखी पुस्तक 'काशी: द इटरनल सिटी' की घोषणा की, जिसमें उन्होंने यह भी

स्वीकार किया है कि जब तक सुधाकरन ने पुस्तक को समाप्त नहीं किया, तब तक उन्होंने अपने जीवन, अपनी महिलाओं, अपने शुभचिंतकों के निधन को देखा, वाराणसी, मुंबई, बेंगलोर, पेरिस और मद्रास से गुजरे। उन्होंने विश्वविद्यालय में छात्रवृत्ति के लिए अपने प्रोफेसर द्वारा सुझाए गए कि उन्हें अपनी थीसिस को पूरा करने की कोई आवश्यकता नहीं है। वह प्रोफेसर का अंतिम संस्कार भी करता है, क्योंकि उसकी खुद की अता पिंडम (मृत्यु की प्रत्याशा में किसी का अंतिम संस्कार भी) है। दशाश्वमेध घाट पर, सुमिता, जो अब एक बुजुर्ग महिला है, केवल उसके पास से गुजरती है, उसे पहचानती तक नहीं। कोई जटिल साजिश के साथ, उपन्यास एक प्रयोग है। साहित्यिक मंडलियों में इसे खूब सराहा गया, लेकिन आलोचक और चित्रकार एम.वी. देवन से आलोचना मिली।

एम.टी. ने एन.पी. मोहम्मद के साथ 'अरबी पोन्नु' (अरब का सोना) उपन्यास लिखा। एम.टी. और मोहम्मद इस काम को पूरा करने के लिए दो सप्ताह की अवधि के लिए कोझीकोड के करुवाराकुंडु गाँव में एक किराए के घर में रहे।

एम.टी. ने लेखन के शिल्प पर दो किताबें लिखी हैं— 'काथिकाटे पनीपुरा' और 'काथिकाटे कला' और विभिन्न विषयों पर उनके उपाख्यान स्तंभ लेख और विभिन्न अवसरों पर भाषणों में किलिवाथिल्लूड, कन्ननथालिपुक्कलुडे कालम, वक्कुकालुदे विस्मयाम् और इयाक्कालुकुदालमुदादे शीर्षक के तहत संकलित किया गया है। 'मनुशियर निझालुकल' और 'आलोककूटथिल थानिये' उनके यात्रा वृत्तांत हैं।

उन्होंने केरल साहित्य अकादमी के अध्यक्ष और तुचन मेमोरियल ट्रस्ट के अध्यक्ष सहित विभिन्न साहित्यिक निकायों में कई महत्वपूर्ण और शक्तिशाली पदों पर कार्य किया। वे केंद्र साहित्य अकादमी के कार्यकारी सदस्य थे। लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस के पास अपने संग्रह में बासठ पुस्तकें हैं, जिनमें ज्यादातर एम.टी. और कुछ उन पर हैं। साथ ही, उनमें से कुछ अंग्रेजी में उनके कार्यों के अनुवाद हैं। एम.टी. 1956 में 'मातृभूमि' समूह के प्रकाशनों में शामिल हो गए। जब वे 1998 में वहाँ से सेवानिवृत्त हुए, तो वे समय-समय पर उनके संपादक और 'मातृभूमि इलस्ट्रेटेड वीकली' के मुख्य संपादक थे। 2 जून 1996 को, उन्हें कालीकट विश्वविद्यालय द्वारा मानद डी. लिट. की डिग्री प्रदान की गई।

एम.टी. वासुदेवन नायर मलयालम सिनेमा में सबसे प्रतिष्ठित और अच्छी तरह से स्वीकृत स्क्रिप्ट लेखकों और निर्देशकों में से